Q→ ह्यूम के कारणता सिद्धांत की व्याख्या करें ?

Ans→ ह्यूम ने कारणता सिद्धांत की एक नवीन एवं मौलिक व्याख्या प्रस्तुत की तथा बताया कि इस संसार में नियतत्व विद्यमान है अर्थात् यदि कोई घटना है, तो उसके बाद कोई अन्य घटना भी होगी। इनमें से पहली घटना को कारण तथा दूसरी घटना को कार्य की संज्ञा तभी दे सकते हैं, जब इन दो घटनाओं में समय की निकटता हो।

इसी नियतत्व, अनुक्रम तथा निकटता को ह्यूम ने कारण-कार्य की संज्ञा दी तथा परम्परागत कारणता मत का खण्डन किया, क्योंकि परम्परागत कारणता सिद्धांत का मत है कि कारण-कार्य एक अनिवार्य नियम है, क्योंकि किसी निश्चित कारण से कोई कार्य उत्पन्न होता है अर्थात् कारण से कार्य को उत्पन्न करने की शक्ति होती है। इस शक्ति के कारण ही हमारी प्रकृति में एकरूपता पाई जाती है। यहाँ एकरूपता से तात्पर्य यह है कि किसी कारण से अब तक जो कार्य उत्पन्न होता आया है, भविष्य में भी वही कार्य उत्पन्न होगा। कारणता की इस परम्परागत

मान्यता के विपरीत ह्यूम का मत है कि कारण में कार्य को उत्पन्न करने की कोई शक्ति है यह धारणा गलत है। ह्यूम के अनुसार कारण कार्य दो स्वतन्त्र घटनाएँ मात्र है। इनमें से जो घटना पहले घटित होती है उसे कारण तथा जो बाद में घटित होती है, उसे कार्य की संज्ञा देते हैं; जैसे - अग्नि है, उष्णता है, ये घटनाएँ मात्र हैं जिसमें अग्नि पहले तथा उष्णता बाद में घटित होती है, किन्तु हमें कभी कोई ऐसा संस्कार प्राप्त नहीं होता कि अग्नि से उष्णता पैदा हुई है, अर्थात् आग में कोई शक्ति है जिसने उष्णता को पैदा किया है। इस शक्ति का मुझे कभी कोई संस्कार प्राप्त नहीं होता इसलिए मैं इसे स्वीकार नहीं करता कि कारण में कार्य को उत्पन्न करने की कोई शक्ति होती है।

कारणता सिद्धान्त वस्तु जगत् से सम्बन्धित होने के कारण अनुभव पर आधारित है। इसलिए कारण-कार्य के बीच संयोगिकता पाई जाती है ना कि अनिवार्यता; जैसे - आग तथा उष्णता वस्तु जगत की दो घटनाएँ हैं, इसलिए अग्नि तथा उष्णता का सम्बन्ध एक प्रकार का तथ्यात्मक सम्बन्ध है